

कथक का रायगढ़ घराना : ऐतिहासिक दृष्टि

यास्मोन सिंह

कथक नृत्यांगना—रायगढ़ घराना

पीएच.डी.स्कॉलर

—❖ सारांश ❖—

“ कथक नृत्य के रायगढ़ घराने के प्रवर्तक राजा चक्रधर सिंह रहे हैं, जिन्होंने उस समय कथक नृत्य को आश्रय प्रदान किया, जब राजनीतिक परिस्थितियों के कारण कलाकारों के जीविकोपार्जन की समस्या विकराल रूप ले रही थी। वर्तमान में रायगढ़ घराना अपनी वि० १८ भौली और राजा साहब की अनेकानेक रचनाओं के फलस्वरूप ख्याति अर्जित कर चुका है। राजा साहब ने पूर्व घरानों में संगीत को छिपाकर रखने की धारणा के विपरीत स्थानीय व लोक-कलाकारों को कथक नृत्य की १० शिक्षा प्रदान कर कथक नृत्य के रायगढ़ घराने की स्थापना की। ”

—❖ संकेत शब्द ❖—

1. घराना एवं भौली (*Gharana and Style*)
2. कथक नृत्य (*Kathak Dance*)
3. इतिहास एवं राजनीति (*History and Politics*)
4. कला (*Art*)
5. नृत्यकला (*Art of Dancing*)
6. संगीतकला (*Art of Music*)
7. साहित्य (*Literature*)
8. ऐतिहासिक अध्ययन (*Historical Study*)

बहुधा यह धारणा बलवती रही है, कि सांगीतिक कलाओं का विकास घरानों में हुआ, जबकि शास्त्र-परम्परा में किसी भी सांगीतिक विधा के लिए 'घराना' शब्द प्रयुक्त ही नहीं हुआ। संगीत-समाज में भास्त्र और घराना समानान्तर रूप से गति" गिल रहे हैं। भारतीय भास्त्रीय-संगीत में नाट्य" शास्त्र और संगीतरत्नाकर जैसे ग्रंथों को गायन, वादन, नृत्य और नाट्य विधाओं में भास्त्र-आधार रूप में स्वीकार किया गया है, जबकि इन्हीं कलाओं में आसक्त कलाकारों ने अपनी रचनात्मकता, कलाधर्मिता और प्रयोग के माध्यम से जिस नवीनता की कल्पना की उसे 'भौली' कहा गया और किसी कलावि" १० श की वि० १८ भौली ने ही घरानों को जन्म दिया। हिन्दुस्तानी भास्त्रीय कलाओं— गायन, वादन और

कथक नृत्य के अपने-अपने घराने हैं, जो संबंधित विधा में नवीन प्रयोग और वि" शैताओं के आधार पर एक-दूसरे से स्वयं को पृथक रखे हुए हैं। 'घराने' का सम्बन्ध एक ऐसी कला से है, जो कि परम्परागत पूर्वजों से चली आ रही है। घराने का मुख्य कलाकार अपनी अद्भुत प्रतिभा के बल पर कोई नवीन प्रयोग करता है, जब उसकी भौली स्थापित हो जाती है, तो घराना बन जाता है।¹

कथक नृत्य में भी गायन-वादन की ही भाँति घराना-परम्परा विद्यमान रही है। घरानों की इस परम्परा में कथक नृत्य का "रायगढ़ घराना" अपनी भौलीगत वि" शैताओं और रचनाओं की दृष्टि से वि" शैत स्थान रखता है। इस घराने के प्रवर्तक राजा चक्रधर सिंह रहे हैं।

यदि इतिहास पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होता है, कि इन घरानों का संबंध किसी-न-किसी रियासत से रहा है। गायन, वादन और नृत्य के प्रायः सभी घराने स्थान के नाम से जाने जाते हैं, जहाँ रियासतकाल में किसी-न-किसी राजवं" का भासन रहा है। अतः घरानों की स्थापना में कहीं-न-कहीं राजनीतिक स्थितियाँ भी समान रूप सम्मिलित रही हैं। चूँकि मध्यकाल में दरबारी संगीत व नृत्य की परम्परा थी। प्रत्येक राजा या नवाब ने अपने दरबार नर्तकों और अन्य सांगीतिक विधाओं में मर्मज्ञ कलाकारों को राज्याश्रय प्रदान किया करते थे। राज्याश्रय प्राप्त नृत्यादि कलाओं में पारंगत कलाकार अपने आश्रयदाता के सम्मुख अपनी-अपनी कलाओं का प्रद" नि किया करते थे।

भारत के रियासतकालीन इतिहास के अध्ययन से ज्ञात होता है, कि जहाँ एक ओर इन राजाओं ने नृत्यादि कलाओं को संरक्षित किया, वहीं दूसरी ओर राज्य-विस्तार हेतु इन राजाओं और नवाबों के मध्य युद्ध भी हुआ करते थे। परिणामतः जो राजा या नवाब युद्ध में हार जाते, तो वहाँ के कलाकारों के समक्ष जीविकोपाजन की समस्या उत्पन्न हो जाती। इसके अतिरिक्त भारतीय कलाओं को अंग्रेजों के भासनकाल में सर्वाधिक बदलावों का सामना करना पड़ा। प्रथमतः लखनऊ के नवाब वाज़िद अली भाह के निश्कासन और अन्य रियासतों पर बढ़ रहे अंग्रेजों के राजनीतिक दबाव तथा अधिकार के कारण राजाओं की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति खराब होने लगी। परिणामतः अनेक कलाकारों के समक्ष कला के साथ-साथ स्वयं के पोषण और जीवनयापन की समस्या भी उत्पन्न हो गयी।

राज्याश्रय समाप्त होने पर कुछ कलाकारों ने स्वतंत्र रूप से कला-साधना प्रारंभ की। इन कलाकारों ने पत्र-परम्परा और वि" शैत-परम्परा के रूप में नृत्यादि कलाओं की वि" शैत प्रदान कर कलाओं को जहाँ एक ओर जीवन्त बनाये रखा, वहीं गुरुओं की अपनी रचनात्मक वि" शैता, पद्धति और वि" शैत-प्रयोग के फलस्वरूप कलाओं में 'भौली' का विकास हुआ। इस प्रकार कला और कलाकार दोनों को उच्च स्थान, पोषण और संवर्धन तो प्राप्त हुआ, किन्तु कलाकारों में अपनी भौली को छिपाकर रखने की मानसिकता भी जन्म लेने लगी। संभवतः इस विचारधारा के कारण ही घरानों का जन्म हुआ। आज भी प्रत्येक घराना अपनी भौलीगत वि" शैताओं के लिए ही पहचाना जाता है।

इसी प्रकार कुछ कलाकारों ने अन्य राज्यों या रियासतों की ओर रुख किया। इन रियासतों में मध्यभारत के एक रजवाड़े ने कथक नृत्य को आश्रय प्रदान किया। कालान्तर में यही रजवाड़ा कथक नृत्य के 'रायगढ़ घराने' के रूप स्थापित हुआ। उल्लेखनीय है, कि कथक नृत्य के अन्य तीन घराने उत्तर भारत में हैं। तत्कालीन रायगढ़ दरबार में जयपुर, लखनऊ और बनारस तीनों घरानों के नर्तकों को आश्रय प्राप्त था। इन नर्तकों में सुखदेव महाराज, अच्छन महाराज, लच्छू महाराज, भाम्भू महाराज, बिहारीलाल, चिरौजीलाल, चाबे महाराज, कुन्दरलाल, सोहनलाल आदि अनेक कथक नर्तकों को नामोल्लेख प्राप्त होता है²,

जो रायगढ़ दरबार में नर्तक एवं नृत्य-गुरु के रूप में रहा करते थे। अतः मध्य भारत में रायगढ़ घराने ने कथक नृत्य का पोषण और संवर्धन किया और आज भी कर रहा है।

छत्तीसगढ़ के पूर्वी छोर पर उड़ीसा राज्य की सीमा से लगा आदिवासी बाहुल्य जिला मुख्यालय रायगढ़ स्थित है। आजादी और सत्ता हस्तांतरण के बाद बहुत सी रियासतें इतिहास के पन्नों में कैद होकर गुमनामी के अंधेरे में खो गये। लेकिन रायगढ़ रियासत के राजा चक्रधरसिंह का नाम भारतीय संगीत-कला और साहित्य के क्षेत्र में असाधारण योगदान के लिए हमेशा याद किया जाता रहेगा। राजसी ऐश्वर्य, भोग विलास और झूठी प्रतिष्ठा की लालसा से दूर उन्होंने अपना जीवन संगीत, नृत्यकला और साहित्य को समर्पित कर दिया। इसके लिए उन्हें कोर्ट ऑफ वार्ड्स के अधीन रहना पड़ा। लेकिन 20वीं सदी के पूर्वार्ध में रायगढ़ दरबार की ख्याति पूरे भारत में फैल गयी।³

तत्कालीन रायगढ़ रियासत ने उस समय नृत्य एवं अन्य विधाओं के कलाकारों को आश्रय प्रदान किया, जिस समय राजनीतिक रूप से इस नृत्य के भविष्य और कलाकारों के जीविकोपार्जन की समस्या विकराल रूप ले रही थी। 'इन दिनों भारतीय भास्त्रीय संगीत परिवर्तन के दौर से गुजर रहा था। वह या तो घरानों, उस्तादों और गुरुओं के पास या फिर तवायफों के कोठों पर सिमट कर रह गया था।'⁴

रायगढ़ रियासत का सांगीतिक इतिहास राजा भूपदेव सिंह से ही भुरू होता है, जिन्होंने 1890 से 1917 तक भासन किया। इनके भासन काल में संगीत कला को फलने-फूलने का अनुकूल वातावरण मिला। भूपदेव सिंह छत्तीसगढ़ के लोकगीत और लोकनृत्य के दीवाने थे। इसके अतिरिक्त वे पखावज, ढोलक और मांदर वाद्य वादन में भी दक्ष थे। इनके भासनकाल में आयोजित गणें⁵ उत्सवों में बिन्दादीन महाराज की '1' श्यायें कथक नृत्य की प्रस्तुतियाँ देने यहाँ आती थीं, जिससे कथक नृत्य के प्रति लोगों का आकर्षण बढ़ता गया।⁵

राजा भूपदेव सिंह के प' चात् राजा नटवर सिंह ने भी संगीतकला को प्रोत्साहन दिया तथा इनके प' चात् राजा चक्रधर सिंह ने रायगढ़ रियासत की सत्ता अपने कु' ल हाथों में लेने के साथ-साथ कथक नृत्य के क्षेत्र में एक नय अध्याय का सूत्रपात भी किया। महाराजा भूपदेव सिंह के द्वितीय पुत्र चक्रधर सिंह अपने पिता की मृत्यु तथा बड़े भाई राजा नटवर सिंह की अकाल मृत्यु उपरांत 1924 ई. में रायगढ़ के राजा बने। चक्रधर सिंह स्वयं कथक नृत्य कला में प्रवीण थे। इसके अतिरिक्त वादन, गायन, लोककलाओं तथा हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू आदि भाषा-साहित्य में भी सिद्धहस्त राजा चक्रधर सिंह का जन्म 19 अगस्त सन् 1905 ई. को गणें⁶ चतुर्थी के पावन पर्व के दिन रायगढ़ के तत्कालीन राजा भूपदेव सिंह के यहाँ हुआ, जिसके उपरान्त इस दिन होने वाला धार्मिक उत्सव एक महान सांस्कृतिक राज्योत्सव में बदल गया।

राजा चक्रधर सिंह बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। संगीत व नृत्य के अतिरिक्त साहित्य के क्षेत्र में उपन्यासकार, कवि व उर्दू भाषा के रूप में भी वे काफी विख्यात रहे। तबला और पखावज में भी उन्हें काफी रुचि थी। वास्तव में, संगीत उन्हें पैतृक सम्पदा के रूप में प्राप्त हुआ। उनके पिता राजा भूपदेव सिंह संगीत के पारखी थे तथा दे' 1 भर के विख्यात संगीतज्ञों का उनके दरबार में सदैव आना-जाना रहता था। साथ-ही-साथ राजा चक्रधर सिंह के दो चाचा पीललाल तथा लाल नारायण सिंह से भी चक्रधर सिंह जी को संगीत की प्रारंभिक '1'क्षा प्राप्त हुई।

राजा चक्रधर सिंह ने कथक नृत्य की '1'क्षा हनुमान प्रसाद व '1'व नारायण जी से प्राप्त की, साथ ही साथ वे तबले और पखावज की '1'क्षा भी प्राप्त कर रहे थे।

जैसे-जैसे नन्हें राजा की आयु बढ़ती गई वैसे-वैसे उनका संगीत और नृत्य के प्रति अनुराग भी चरम पर पहुँच गया। उनके दरबार में नित्यप्रति नृत्य व संगीत की सभायें होती थीं, जिसमें दे" 1 भर के नामी कलाकार भाग लिया करते। उस युग का भायद ही कोई कलाकार होगा, जो रायगढ़ न आया हो और उसे राजा चक्रधर सिंह जी के द्वारा सम्मानित न किया गया हो। राजा चक्रधर सिंह नृत्य, लास्य (भाव प्रद" 1न), गायन तथा वादन बखूबी समझते थे, तथा संगीत की इन चारों धाराओं को वे समानता से महत्त्व देते थे।

राजा चक्रधर सिंह अपनी रियासत के अंतिम राजा थे, क्योंकि इसके प" चात् भारत स्वतंत्र हो गया तथा दे" 1 के अन्य रियासतों और रजवाड़ों की ही भाँति रायगढ़ भी भारतीय गणतंत्र में सम्मिलित हुआ। राजा साहब ने अपने भासनकाल के दौरान कथक नृत्य एवं अन्य कलाओं को आश्रय प्रदान करने के साथ-साथ कलाकारों को भी सम्मान दिया।

यही वजह थी कि इन सभी श्रेष्ठ गुरुओं के सान्निध्य में राजा चक्रधर सिंह स्वयं एक श्रेष्ठ और कु" 1ल गायक, वादक और नर्तक बन गये थे। वे स्वयं तबला बजाते और नर्तकों को उनके अनुसार नाचना पड़ता। "आव" यकता पड़ने पर वे स्वयं नृत्य की 1" 1क्षा देकर अपना मनोभाव स्पष्ट करते थे। बाद में वहीं परम्परा रायगढ़ की भौली के रूप में लोकप्रिय हुई और कथक नृत्य के विकास में एक नया अध्याय जुड़ा।⁶

चक्रधर सिंह सदैव नामी संगीतज्ञों और गुणीजनों से सतत् सम्पर्क में रहते थे, जिसके फलस्वरूप राजा साहब ने दो अति महत्त्वपूर्ण कार्य किये, प्रथम यह कि- उन्होंने संगीत संबंधी अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथों की रचना की और दूसरा अपने रायगढ़ के प्रतिभा" 1ाली युवकों को इन गुणीजनों से प्र1" 1क्षित करवाया। राजा साहब द्वारा रचित ग्रंथों में "नर्तन सर्वस्वम्", "ताल तोय निधि", "राग रत्न मंजूषा", "मुरज वर्ण पुष्पाकर" आदि ग्रंथ बहुत महत्त्वपूर्ण रहे। राजा साहब नृत्य व संगीत के क्षेत्र में नित नये-नये प्रयोग किया करते थे और बाद में इन्हीं प्रयोगों को ग्रंथ का रूप दे दिया।

राजा बहादुर ने अपने दरबार में देश-विदेश के निष्णात कलाकारों और साहित्यकारों को आमंत्रित करते थे। उनके कुशल निर्देशन में रायगढ़ के अनेक बाल कलाकारों को संगीत, नृत्यकला और तबला वादन की शिक्षा मिली, जिन्होंने देश विदेश में रायगढ़ दरबार का प्रचार-प्रसार किया। इन कलाकारों में कार्तिकराम, कल्याणदास, फिरतूदास और बर्मनलाल की जोड़ी उल्लेखनीय रही है, जिनका निश्चित रूप से "रायगढ़ कथक घराना" के निर्माण में बहुत बड़ा योगदान रहा है।⁷

सन् 1947 में, संगीत के महान साधक, अद्वितीय नर्तक और अभूतपूर्व लेखक व निष्णात साहित्यकार का निधन हो गया। इनके निधन पश्चात् तत्कालीन गुरुओं ने इसे विस्तार रूप देकर दे" 1 के कोन-कोन में राजा साहब द्वारा स्थापित एवं पोषित नृत्य पद्धतियों का प्रचार-प्रसार किया, जो आज भी जारी है। कथक नृत्य के धरातल पर राजा चक्रधर सिंह ने जिस रचनात्मकता का बीजारोपण किया था, वह धीरे-धीरे एक वि" 1ाल वृक्ष का रूप धारण कर चुका है और रायगढ़ घराने का कथक नृत्य अपने चरम पर स्थापित हो चुका है।

वर्तमान में रायगढ़ घराना अपनी वि1" 1श्ट भौली और राजा साहब की अनेकानेक रचनाओं के कारण दे" 1-विदे" 1 में ख्याति अर्जित कर चुका है। पूर्व घरानों में प्रचलित संगीत को छिपाकर रखने की धारणा के विपरीत स्थानीय लोक कलाकारों को कथक नृत्य की 1" 1क्षा प्रदान की तथा अन्य घरानों के गुरुओं से भी उन्हें 1" 1क्षित किया। फलस्वरूप राजा साहब का स्वप्न उनके 1" 1श्यों और अन्य कथक गुरुओं के योगदान के फलस्वरूप

वि” गल वृक्ष की भाँति कथक नृत्य का प्रतिनिधित्व कर रहा है। जयपुर, लखनऊ और बनारस घराने की ही भाँति ही रायगढ़ घराना निरन्तर नदी की नि” चल धारा के समान प्रवाहमान है।

संदर्भ सूची

- 1 आज़ाद, पं.तीरथ राम, कथक ज्ञाने” वरी, नटे” वर कला मंदिर, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008, पृ.244
- 2 महंत, भगवान दास माणिक, कथक घराना रायगढ़, बी.आर.रिदम्स, दिल्ली, 2015, पृ.18
- 3 प्रो.अ” वन के” रवानी का लेख—रायगढ़ और राजा चक्रधर सिंह http://www.rachanakar.org/2007/07/blog-post_09.html
- 4 महंत, भगवान दास माणिक, कथक घराना रायगढ़, बी.आर.रिदम्स, दिल्ली, 2015, पृ.12
- 5 वही।
- 6 आज़ाद, पं.तीरथ राम, कथक ज्ञाने” वरी, नटे” वर कला मंदिर, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2008, पृ.425
- 7 प्रो.अ” वन के” रवानी का लेख—रायगढ़ और राजा चक्रधर सिंह http://www.rachanakar.org/2007/07/blog-post_09.html

यास्मीन सिंह

कथक नृत्यांगना—रायगढ़ घराना

पीएच.डी.स्कॉलर

डी—1/20, शासकीय आवासीय परिसर

देवेन्द्र नगर, रायपुर—492001 (छ.ग.)

मो.नं.09755038387

E-mail: kathakraigarh16@gmail.com